Research Paper Drawing

Tibbti Thank Chitran Vishay Vshtu e Chitra Shaiyojan ki Niyam Bandhata

Dr. Vasudha Joshi | C/O Mr. Mohan Joshi Business and Computer firms B-4, Patel Nagar Industrial area, Dehradun

KEYWORDS

प्रारूप :–

बौद्ध धारणाओं तथा विचारों के अनुसार अधिकतर बौद्ध कला सूक्ष्म शरीर, प्रवचन और मस्तिष्क के रूप में कार्य करती है। ऐसे चित्र धार्मिक अभ्यासकर्ता के लिए उसकी सम्पूर्ण शाखा और परम्परा की प्रतिमूर्ति है थन्का चित्रण के अन्तर्गत बौद्ध धर्म की विभिन्न शाखाओं तथा विषयों के अनुरूप ही चित्रण अलग–अलग प्रकार से किया जाता है। अतः थन्का चित्रण की विषय वस्तु में विविधता है व चित्रण के लिए निश्चित नियम है।

तिब्बती थन्का चित्रण आज तिब्बत की सीमाओं तक सीमित न रहकर भारत, नेपाल आदि देशों में एक प्रमुख कला के रूप में उभरकर आये हैं। वर्तमान में यह थन्का चित्र जो पहले तिब्बत से मँगाये जाते थे वह स्वयं भारत में तिब्बती कलाकारों की देखरेख में यहाँ के स्थानीय निवासियों द्वारा बनाये जाने लगे हैं। तिब्बती कलाकारों को थन्का चित्रण की प्रेरणा भारतीय पट्–चित्रों से मिली होगी। तीसरी शताब्दी के बौद्ध तांत्रिक ग्रंथ मंजूश्री मूल कल्प में कपड़े पर चित्रण करने का सबसे प्राचीन विवरण मिलता है।[1]

बौद्ध धर्म तथा शिक्षा में सम्बन्धित प्रतीक भी थन्का की विषय वस्तु रहे हैं। धर्मचक्र, छत्र, बोधि वृक्ष आदि का अंकन तो प्राचीन काल में ही भगवान बुद्ध के सांकेतिक रूप में हुआ है। थन्का में स्तूप, अष्टमंगला–चिन्हों (छत्र, ध र्मचक्र, ध्वज कमल, शंख, कलश, मत्स्य युग्म, श्रीवस्ता) आदि विम्बों का चित्रण किया गया है। कभी–कभी विभिन्न गुरूओं, देवी–देवताओं से संबंधित थन्काओं पर भी प्रतीकों का प्रयोग किया गया है। ये वास्तव में थन्का के मौलिक अंश होते हैं।

थन्का में सर्वाधिक रूप से ज्ञान की प्राप्ति कर चुके प्रबुद्ध व्यक्तियों, गुरूओं का चित्रण किया जाता है। इसके अन्तर्गत विभिन्न देवी–देवताओं तथा गुरूओं को व्यक्तिगत रूप से अलग–अलग अर्थात एक थन्का पर एक ही को चित्रित किया जाता है। सामान्यतः थन्का के मध्य केन्द्र में बड़े आकार में इनका चित्रण करते हैं तथा साथ ही उनके आसपास या पृष्ठभूमि में उनसे सम्बन्धित संकेतो, पवित्र वस्तुओं आदि का चित्रण किया जाता है। ऐसे थन्का में पृष्ठभूमि पर अन्य आकृतियों की अधिकता न होने के कारण कलाकार को अपने कला कौशल को दृश्य चित्रों, व विभिन्न अलंकृत पैटर्न के डिजाइनों रूपांकन, आदि के रूप में प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होता है।

कई बार थन्का का विषय केवल भगवान बुद्ध, गुरूओं, योगियों का थन्का के मध्य चित्रण नहीं होता अपितु कलाकार थन्का में उन प्रबुद्ध व्यक्तियों के जीवन से सम्बन्धित किसी एक महान कथा या कई विशेष कथानकों का चित्रण करते हैं। कभी–कभी उनके जीवन की कई गाथाओं की श्रृंखला भी बनायी जाती है जिसे वर्णनात्मक चित्र (Narrativbe painting) या जीवन सम्बन्धी चि = (Biographical) कहा गया है।

कुछ थन्काओं में समूह में गुरूओं, देवी–देवताओं, लौकिक शक्तियों, द्वितीयक देवी–देवताओं का चित्रण करना होता है। ऐसे में कई प्रबुद्ध शक्तियों के स्थान तथा आकृति बौद्ध धार्मिक ग्रन्थों में वर्णित लेख के अनुसार ही चित्रित की जाती है। ऐसे समूह चित्रण में अधिकतर एक मुख्य आकृति के चारों ओर उससे सम्बन्धी द्वितीयक आकृति का

चित्रण किया जाता है। कभी–कभी समूहों में कोई एक मुख्य आकृति न होकर सभी आकृतियों को समान रूप से चित्रित किया जाता है जैसे–पद्मसम्भव के आठ रूप, पैतींस बुद्ध का समूह आदि। कई चित्रों में पृष्ठभूमि के मध्य में केवल भगवान बुद्ध या कभी भगवान बुद्ध और उनके दोनों तरफ अपेक्षाकृत छोटे आकर में बनाये गये उनके शिष्य सारीपुत्र तथा मौद्गलयान के चारों ओर, अपने–अपने शाखा से सम्ब. न्धित गुरूओं, लौकिक शक्तियों या रक्षकों का चित्रण किया जाता है। जिसमें थन्का के मध्य भगवान बुद्ध का चित्रण तो समान रूप से किया जाता है किन्तु अलग–अलग शाखाओं से सम्बन्धित अलग–अलग गुरूओं को अलग–अलग थन्क. ाओं पर उनके ज्ञान प्राप्ति, योग्यता के क्रमानुसार चित्रित किया जाता है। कभी–कभी मध्य में शाखा प्रमुख तथा उनके चारों ओर द्वितीयक गुरूओं का चित्रण किया जाता है। सामान्यतः थन्का के मध्य बनी आकृति उसके चारों तरफ बनी द्वितीयक आकृतियों से बड़ी बनायी जाती है। कई बार मुख्य आकृति के चारों ओर बनी अन्य आकृति मुख्य आकृति के ही अलग–अलग अवतार होते हैं। कभी मुख्य आकृति के चारों ओर कई अनुपूरक आकृतियों का अंकन करना होता है। ऐसे में चित्र की पृष्ठभूमि में किसी प्रकार के दृश्य चित्रण या रूपांकन के लिये कोई स्थान शेष नहीं रहता तथा द्वि तीयक आकृतियों की अधिकता के कारण इन्हें भी केवल सुनहरी रेखाओं द्वारा बनाया जाता है, और केवल मुख्य चित्र का पूर्ण रूप से रंगाकन किया जाता है। ऐसे थन्काओं में पृष्ठभूमि सामान्यता काले रंग द्वारा बनायी जाती है।

जब बौद्ध धर्म की अलग–अलग शाख. ाओं के लिये अलग–अलग थन्का का संयोजन करना होता है तो कलाकार सर्वसाधारण दो विधियों का प्रयोग करता है। जिन्हें रेफ्यूज ट्री (Refuge Trees) और एसेम्बली फील्ड (Assembly Field) के नाम से जाना जाता है।

रेफ्यूज ट्री –रेफ्यूज ट्री का तात्पर्य है किसी भी अभ्यास कर्ता का, किसी धर्म या प्रबुद्ध व्यक्ति का आश्रय लेना। बौद्ध धर्म के अन्तर्गत बुद्ध, धर्म व संघ त्रिरत्न माने गये हैं। इसके चित्रण में मध्य में भगवान बुद्ध को बनाया जाता है। धर्म का निरूपण पवित्र पुस्तकों के निर्माण द्व ारा तथा संघ को बौद्धिसत्व तथा भिक्षुओं के समूह द्वारा चित्रित किया जाता है। इसमें बौधिसत्व मध्य में बने मुख्य चित्र के बाँयी ओर बनाये जाते हैं। वहीं आकाश में वृक्ष की टहनियों का बौद्ध धर्म की प्रमुख शाखाओं के मुख्य गुरूओं का तथा इनसे नीचे की ओर वृक्ष की दूसरी प्रमुख शाखाओं में समुदाय या शाखा के रक्षकों का चित्रण किया जाता है।[2]

एसेम्बली फील्ड – थन्का चित्रों को ऐसेम्बली फील्ड भी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत भी गौरवशाली व प्रतिष्ठित व्यक्तियों का वह समूह आता है जिनको पूजा तथा अर्पण किया जाता है। रेफ्यूज ट्रीस से भिन्न एसेम्बली फील्ड में मुख्य तथा द्वितीयक आकृतियों को एक निश्चित क्रम द्वारा चित्रित किया गया जाता है। मुख्य चित्र को चित्रपट या पृष्ठभूमि के मध्य बड़े आकार में और अन्य द्वि तीयक आकृतियों को इसके चारों ओर संकेन्द्री पंक्तियों में अवरोहण के क्रम में अपेक्षाकृत छोटे आकार में चित्रित किया जाता है। इस श्रेणी क्रम के अनुसार सर्वप्रथम गुरू, द्वितीय में यिदम, तृतीय में बुद्ध, चतुर्थ में बौधिसत्व, पाँचवे में प्रत्येक का बुद्ध, छटे में सतावीरा, सातवें में धाक, आठवें में धर्मपाल को चित्रित किया जाता है।[3]

सामूहिक चित्रण में शारीरिक छवि तथा संयोजन में उनके स्थान, आकार को निर्धारित करने में लिखित रीति तथा परम्पराओं का दृढ़ तथा कठोर नियंत्रण है। इनके कुछ नियम सार्वभौमिक है जिनका पालन धार्मिक कला में यथ. ावत् किया जाता है। द्वितीयक चित्रों को क्रमिक सामंजस्य के साथ मुख्य चित्र के चारों ओर नियोजित तथा नियुक्त करना द्वितीयक चित्रों या आकृतियों की संख्या पर भी निर्भर करता है। किन्तु इन द्वितीयक आकृतियों के स्थान का निध ार्रण करते समय मुख्य रुप से शाखा तथा स्तर का ध्यान रखना भी अति आवश्यक होता है क्योंकि प्रत्येक शाखा में उच्च तथा निम्न स्थान होते हैं। उनके अनुरुप ही प्रत्येक शाखा का चित्रण किया जाता है। चित्र में इन देवताओं, गुरूओं का स्थान सही अनुपात में होना आवश्यक है जिससे संयोजन में एक सही संतुलन बना रहे, इसके लिए सर्वाधिक प्रचलित तथा सर्वमान्य परम्परागत श्रेणी क्रम का अनुसरण या पालन किया जाता है जो निम्न प्रकार है – सर्वप्रथम 1) गुरु 2) यिदम 3) बुद्ध 4) बोधिसत्व 5) धाक तथा ध ाकिनी 6) धर्मपाल 7) यक्ष 8) समृद्धि के देवता 9) अन.

ुपूरक अथवा गौण देवतागण।[4]

बौध धर्म से सम्बन्धित विभिन्न शाखाओं में मन्डल का चित्रण भी किया जाता है। विशेषकर वज्रयान से सम्बन्धित शाखा में। अतः थन्का चित्रण में भी मन्डल का होना स्वाभाविक है, किन्तु मण्डल का चित्रण करना अत्यंत जटिल क्रिया है। यह एक नियत तथा निश्चित प्रकार का संयोजन है। इसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं किया जाता है। अलग–अलग पुजाओं से सम्बन्धित मंडल अलग–अलग प्रकार से निर्मित किये जाते हैं। इसमें कई आकृतियों के साथ–साथ कई प्रकार के ज्यामितीय आलेखन भी होते हैं और प्रत्येक आलेखन का अपना अलग महत्व होता है। अधिकतर मंडल के केन्द्र में मुख्य या श्रेष्ठ आकृति होती है और उसके चारों ओर क्रम से अन्य शक्तियों तथा ज्यामितीय आलेखनों का चित्रण किया जाता है। मण्डल को प्रेरणात्मक, शक्ति के समाकलन के पूरक के रुप में चित्रित तथा प्रस्तुत किया जाता है।

निष्कर्ष

थन्का चित्र में आकृति व उसके स्थान के चित्रण के लिये निश्चित नियम होने के कारण कलाकार को अपने कला–कौशल को दिखाने का अवसर कम प्राप्त होता है। अर्थात् इनकी आकृति या संयोजन को विभिन्न कलाकारों द्वारा भी लगभग समान रुप से ही बनाया जाता है। यह पहले से बनाये गये आलेखन का अनुकरण करने के समान है। चित्रण के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक यह पूर्व में चित्रित क्रियाओं की पुनरावृत्ति है। कलाकार पर सर्वाधिक बन्धानों के होते हुए भी कुछ कलाकार मात्र प्रतिलिपि बनाने वाले की अपेक्षा मौलिक अधिक होते हैं और उनके कार्य में मौलिक सृजनशीलता तथा कल्पना की झलक दिखाई देती है। ऐसे में कलाकार परम्परा का पालन करते हुए थोड़े से ही स्थान में अपने कला–कौशल द्वारा अपनी अलग पहचान बनाते हैं। यह अवसर थन्का के रुपांकन अर्थात डिजाईन वाले भाग जैसे दृश्य चित्र, कपड़े, गहने तथा लघु चित्र की बारीकियों आदि में प्राप्त होता है। कलाकार के इन रुपाकंनों में नवीनता दिखाई देती है। वह योग्य कलाकार जो कि एक सामान्य संयोजन को विशेष तेजयुक्त तथा उत्कृष्ट बनाने की क्षमता रखते हैं। उनकी माँग सदैव ही रहती है और यह आसानी से जन–सामान्य का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं। ऐसे कलाकारों में दैवीय गुणों का वास माना जाता है उनके लिए थन्का चित्रण एक प्रकार की साधाना का रुप होता है।

4 वही पृ0 40

REFERENCES

1. चक्रवर्ती अंजन, सेक्रेड बुद्धिस्ट पेंन्टिंग, रोली एण्ड जेन्सन, न्यू दिल्ली, 2006 द्य 2. जेक्सन, डेविड एण्ड जेनिक, तिब्बतन थन्का पेन्टिंग, सिनड्रिया पब्लिकेशन, लन्दन, 1998 द्य 3. हिल, विक्टोरिया ब्लाइथ, केयर एण्ड हेडलिंग ऑफ थन्का, केन्थस फाउण्डेशन (सेन फ्रांसिसको), प्रेस रूम प्रिन्टर एण्ड डिजाईनर, हॉग काँग, 2007 द्य 4. चन्द्रा, लोकेश, तिब्बतन आर्ट, नियोगी बुक्स, न्यू दिल्ली, 2008 द्य